



## मसूर

मसूर रबी दलहन फसलों में से एक है। मसूर छिलका सहित एवं छिलका रहित दोनों दशाओं में दाल के लिए उपयुक्त है। राजस्थान में 1991-92 में यह 12000 हेक्टेयर में बोई जाती थी जो बढ़कर 1999-2000 में 50000 हेक्टेयर पहुंच गयी इसके साथ-साथ उत्पादन भी 9000 टन से बढ़कर 52000 टन पहुंच गया है। उत्पादकता की दृष्टि से भरतपुर, झालावाड़ एवं भीलवाड़ा जिले प्रमुख हैं। जहां मसूर की खेती सुचारू रूप से की जा सकती है। देश में मसूर कुल 13.3 लाख हेक्टेयर में बोई जाती है। जिससे उत्पादन लगभग 8.5 लाख टन होता है। मसूर में 25 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत वसा, 55.8 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट पाया जाता है।

### भूमि एवं उसकी तैयारी :

मसूर के लिए तीन तरह की भूमि उपयुक्त होती है। अति शीघ्र पकने वाली प्रजातियों हेतु दोमट, बलुई दोमट व मोटे दाने के मसूर हेतु भारी मिट्टी जिसमें धान व ज्वार की फसल अच्छी होती हैं तथा छोटे दाने एवं देर से पकनेवाली प्रजातियों हेतु भारी मिट्टी जिसमें समुचित जल निकास हो। प्रायः नदियों के किनारे की भूमि उपयुक्त होती है। भूमि की तैयारी हेतु पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से जबकि शेष 2-3 जुताई देशी हल या ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर से करनी चाहिए। अंतिम जुताई के समय 20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से एंडोसल्फान डसट का भुरकाव कर देना चाहिए ताकि भूमि को दीमक एवं कीटों से वंचित रखा जा सके।

### खाद एवं उर्वरक का प्रयोग :

प्रायः मसूर की खेती बारानी अवस्था में की जाती है। जिसमें गोबर की खाद का प्रयोग बहुत कम होता है। यद्यपि 20-25 टन गोबर की सड़ी खाद का प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने पर अच्छी उपज प्राप्त होती है। उर्वरकों में 20 किग्रा. नत्रजन, 40 किग्रा. फॉस्फोरस एवं 10 किग्रा. सल्फर का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करने पर अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

### बीज की मात्रा :

जबकि मोटे दानों की स्थिति में 50 किग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की बुवाई करनी चाहिए। देर से बुवाई हेतु बीज की मात्रा डेढ़ गुणा कर देनी चाहिए।

### बीजोपचार :

बीमारियों से बचाने हेतु 2 ग्राम बावस्टीन या 3 ग्राम थायरम से प्रति किग्रा. बीज को उपचारित करें। तत्पश्चात् राइजोबियम जीवाणु संवर्धन से उपचारित करें। तीन पैकेट जीवाणु संवर्धन को ढाई लीटर पानी में तीन सौ ग्राम गुड़ के गरम किये घोल को ठंडा करने के पश्चात् भली-भांति मिला लें तथा इसे बीज पर डाल कर मटके में इस प्रकार से मिला लें कि सभी बीजों पर समान रूप से परत बन जाये। इन बीजों को छाया में सुखा लें। सुखाने के बाद बुवाई के काम में लें।

**बुवाई का समय :**

अच्छे अंकुरण के लिए 20 सेंटीग्रेट तामक्रम उपयुक्त होता है। अतः बुवाई के लिए 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर का समय उपयुक्त है। हालांकि मसूर की बुवाई 15 दिसम्बर तक की जा सकती है परंतु देर से बुवाई करने से उपज कम प्राप्त होती है।

**बुवाई की विधि :**

बुवाई पंक्तियों में करनी चाहिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20-25 सेमी. जबकि पौध से पौध की दूरी 10-15 सेमी. रखनी चाहिए।

**सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई :**

मसूर की खेती मुख्य रूप से असिंचित क्षेत्रों में की जाती है परंतु हल्की मिट्टी या दोमट मिट्टी में खेती हेतु एक या दो सिंचाई आवश्यक है। पहली सिंचाई बुवाई के 40 दिन बाद अवश्य करें। निराई-गुड़ाई 45-50 दिन पर कर देनी चाहिए ताकि पौधों का समुचित विकास हो सके।

**फसल संरक्षण :**

मसूर की फसल को विभिन्न प्रकार के कीटों एवं बीमारियों से क्षति पहुंचती है, जिससे फसल का संरक्षण अति आवश्यक है।

**प्रमुख कीट :**

वैसे तो मसूर में कीटों द्वारा क्षति कम होती है परंतु मसूर में लगने वाली प्रमुख कीट फली छेदक (पॉड बोअर) कीट, मोयल (एफिड) है।

**फली छेदक कीट :**

यह भूरे रंग का 20-40 मिमी. आकार में लार्वा रूप में पाया जाता है। कीट के शरीर पर हल्के किनारे या गहरे रंग की धारियां पायी जाती है। यह कीट रात को सक्रिय होता है व पत्तियों के निचले भाग पर अण्डे देता है। पहले पत्तियों को फिर फूलों को क्षति पहुंचाता है तथा अंत में हरी फलियों में सूराख बनाकर अंदर प्रवेश कर जाता है। जहां यह बैठकर बीज को खाकर फलियों को खोखला बना देता है।

**रोकथाम :**

फली छेदक कीट के रोकथाम हेतु एंडोसल्फान (35 ई.सी.) या मोनोक्रोटोफॉस (36 डब्ल्यू.एस.सी.) की सवा लीटर मात्रा 800 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव 15 दिन के अंदर पर दुहराना लाभकारी है।

**मोयला ( एफिड ) :**

वैसे तो एफिड बहुत कम क्षति पहुंचाता है। यदाकदा यह फसल को नुकसान पहुंचाता है। छोटे 2 मि.मी. चमकीले काले रंग के ये कीट पत्तियों को क्षति पहुंचाते हैं। मादा पंख धारणा करती है तथा हवा के साथ उड़कर दूर तक जाती है। पत्तियों एवं तने से रस चूसती है जिससे पौधे कमजोर पड़ जाते हैं।

**रोकथाम :**

मोयले की रोकथाम हेतु एण्डोसल्फॉन (35 ई.सी.) सवा लीटर अथवा क्लोरोपाइरीफॉस (20 ई.सी.) 600 मिली. को पानी (800 लीटर) में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकतानुसार दुहरायें।

**प्रमुख बीमारियां :**

मसूर में लगने वाली प्रमुख बीमारियां उकठा रोग (फ्यूजेरिम विल्ट), तना गलन रोग (स्टेमराट) शुष्क जड़ गलन रोग (ड्राई रूट राट), रोली रोग (रस्ट) हैं-

**१. उकठा रोग :**

यह रोग खेत में अलग-अलग भागों में अंकुरण के समय एवं पौध पौध अवस्था में दिखाई पड़ता है। पत्तियां सूखने लगती हैं तथा बहुत जल्द पौधे नष्ट हो जाते हैं।

**रोकथाम :**

फसल चक्र अत्यन्त लाभकारी है। इसकी रोकथाम हेतु 0.3 प्रतिशत बेनोमिल या (1.1., 0.3 प्रतिशत) थायरम एवं बेनोमिल द्वारा बीजोपचार लाभकारी है। रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें।

**२. तना गलन रोग :**

खेत में सर्वप्रथम पौधों के उर्ध्व भाग में तने के ऊतक गहरे भूरे रंग के होकर गलने प्रारंभ होते हैं। बाद में संपूर्ण पौधा नष्ट हो जाता है।

**रोकथाम :**

इसकी रोकथाम हेतु 2-3 लीटर प्रति हेक्टेयर क्लोरोथैलील या डाईइथेन एम-45 नामक दवा का छिड़काव लाभकारी है। रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें।

**३. शुष्क जड़ गलन रोग :**

प्रारंभिक एवं प्रौढ़ावस्था दोनों में अकस्मात् पौधे सूख जाते हैं। पत्तियों के पीले पड़ने के लक्षण भी नहीं दिखाई देते हैं। पौधे को ऊपर से पकड़कर खींचने पर वे उखड़ जाते हैं।

**रोकथाम :**

रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें। तीन चार साल का फसल चक्र अपनायें। बीजों को उपचारित करके बुवाई करें। खेत की गहरी जुताई के पश्चात् धूप में तपने दें।

**भंडारण :**

मसूर का भंडारण सुचारू रूप से किया जाना चाहिए। भंडारण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

१. भंडारण करते समय मसूर के दानों को भली भाँति सुखाकर साफ कर लें ताकि नमी की मात्रा आठ प्रतिशत से कम रहे।
२. मसूर दानों को लोहे की कोठियों में भरकर रखें।
३. यदि दाने क्षतिग्रस्त हों तो संरक्षित करने हेतु 3 टिकिया एल.पी. या ई.डी.बी. तीस मिलीलीटर प्रति टन की दर से प्रयोग कर धूम उपचारित करें। इस बात का विशेष ध्यान की धुआं बाहर न जाये।

**सारांश :**

मसूर रबी की फसल है। मसूर की दाल पौष्टिक मानी जाती है। इनमें 25 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत वसा एवं 55.8 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। मसूर की प्रचलित प्रजातियां सपना, पंत एल-4, एल-4076, प्रिया एवं पूसा वैभव है।

अच्छी फसल हेतु भूमि में जल निकास व्यवस्था तथा 20 किग्रा. नत्रजन, 40 किग्रा. फॉस्फोरस एवं 20 किग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से दें। समय पर निराई-गुड़ाई एवं फसल संरक्षण आवश्यक है।

उपयुक्त किस्में एवं उनकी विशेषताएं

क्र.सं.	उन्नत किस्में	संस्तुत भाग	उपज क्वि./हे.	पकने का समय (दिन)	विशेषताएं
1.	एल.एच. 84-8 (सपना)	उत्तर-पश्चिम मैदानी भाग	15	130-135	अर्द्ध प्रसार पौधे मध्यम ऊंचाई, भूरे रंग के मोटे मध्यम आकार के दाने (2.7 ग्राम) रोली रोग रोधी
2.	पंत एल-4	उत्तर-पश्चिम मैदानी भाग	18	130-135	अर्द्ध प्रसार पौधे, गहरे हरे रंग की पत्तियां, छोटे दाने, गहरे भूरे रंग के दाने, रोली रोग एवं उक्ठा रोग रोधी
3.	एल-4076	उत्तर-पश्चिम मैदानी भाग	14	135-140	अर्द्ध प्रसार पौधे, मध्यम ऊंचाई, गहरे हरे रंग की पत्तियां, मोटे एवं मध्य मैदानी भाग दाने, रोली रोग रोधी
4.	डी.पी.एल.-15	उत्तर-पश्चिम मैदानी भाग	15.5	130-135	अर्द्ध प्रसार पौधे, मोटे गहरे भूरे रंग के दाने, रोली रोग रोधी एवं उक्ठा सहन शक्ति
5.	एल.-4147	उत्तर-पश्चिम	17.8	130-135	अर्द्ध प्रसार पौधे, हल्के हरे रंग की पत्तियां,